27.2 छायावाद युग : आलोचना का स्वच्छंदतावादी पथ

27.2.1 छायावादी कवि-आलोचक

छायावादी कवियों ने एक ओर प्राचीन शास्त्रवादी साहित्य-मूल्यों का विरोध किया और दूसरी ओर नए मूल्यों के प्रश्न पर उन्होंने आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और रामचन्द्र शुक्ल से टक्कर ली। कवि सुमित्रानंद पंत के काव्य-संग्रह 'पल्लव' के 'प्रवेश' को आलोचना के नए प्रतिमानों का पहला घोषणा-पत्र कहा जाता है। पंत को शास्त्रबद्ध जड़ता से मुक्ति के लिए आशा की किरण 'उत्साही हिंदी-प्रेमी छात्रों' में दिखाई पड़ रही थी 'वयोवृद्ध आचार्यों' में नहीं। यह स्वाभाविक था। वयोवृद्ध आचार्यों से उन्हें अपनी रचनाओं के लिए यह सहानुभूति और सराहना नहीं मिली जिसकी वे अपेक्षा कर रहे थे। शायद इसलिए उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि हिंदी में नए ढंग की आलोचना की शुरुआत अंग्रेज़ी ढंग की समालोचना के प्रचार से ही हो सकती है, और यह अवसर विश्वविद्यालयों में दोनों भाषाओं के साहित्यों के आपस मेलजोल से ही सहज-सुलभ हो सकता है।

आलोचना की नई पद्धतियों की माँग करने वालों में पंत जी अकेले नहीं थे। उन्होंने छायावाद की जिन कारणों से आलोचना की थी उन आक्षेपों का उत्तर अपने-अपने ढंग और तर्कों से और लोग भी दे रहे थे। निराला ने 'प्रबंध प्रतिमा' में आचार्य शुक्ल के रहस्यवाद-विरोध का जवाब 'साहित्य की नवीन् प्रगति' शीर्षक निबंध में दिया।

रहस्यवाद और उससे जुड़े हुए प्रश्नों को लेकर जयशंकर प्रसाद भी आचार्य शुक्ल से टकराए। समकालीन काव्य पर 'सुकवि किंकर' नाम से महावीरप्रसाद द्विवेदी जो प्रहार कर रहे थे उनसे पंत और निराला दोनों ने अपने-अपने ढंग से निबटने की कोशिश की। परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि सभी छायावादी कवि तत्कालीन आलोचकों के विरुद्ध एकजुट थे। स्वयं निराला और पंत के बीच भी पर्याप्त मतभेद था। निष्कर्ष यह कि इस दौर में साहित्यिक मूल्यों को लेकर अनेक स्तरों पर संघर्ष हो रहा था। महत्वपूर्ण बात यह थी कि वैयक्तिक अभिनिवेशों के बावजूद इन विवादों से हिंदी आलोचना तो निश्चित रूप से विकसित और समृद्ध हुई साथ ही कवियों के मौलिक विचार भी प्रकट हुए। आपसी मतभेदों के बावजूद ये कवि इस बात पर सहमत थे कि पहले से चली आती हुई आलोचना-पद्धति से इनके काव्य का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। इसलिए इन्होंने कहीं पुरानी पद्धति को चुनौती दी और कहीं उसका पुनराख्यान किया।

पंत ने रसवाद के स्थूल बाह्य प्रपंच को निरर्थक घोषित किया और प्रसाद ने दार्शनिक धरातल पर संस्कृति और परम्परा के साथ छायावाद के संबंध और सम्पृक्ति का तर्कसम्मत व्याख्यान कर उसे गरिमा दी। इन्होंने रीतिकालीन काव्य-रुचि से भिन्न एक नए सूक्ष्म शिल्प-बोध की आवश्यकता पर बल दिया। पंत का काव्य-भाषा विश्लेषण और निराला के छंद संबंधी विचार इस दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण हैं। अपने ढंग से यह छायावाद के लिए नए साहित्यशास्त्र के निर्माण का प्रयत्न था। निराला के द्वारा की गई अर्थ मीमांसाएँ, प्रसाद के द्वारा छायावाद और यथार्थवाद का संबंध-निरूपण, प्रगतिवाद के संदर्भ में महादेवी-द्वारा छायावाद का पक्ष-समर्थन, नए ढंग के काव्य-बोध का निर्माण करने का प्रयास है।

पंत के 'पल्लव' का प्रवेश एक कला-मर्मज्ञ कवि के सूक्ष्म शिल्प-बोध का परिचायक है। इस कला-विवेचन ने आधुनिक कविता के आस्वाद के लिए समर्थ पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। निराला की आलोचनाओं का स्वर प्रायः विवादात्मक है, किंतु उनमें एक दक्ष व्यावहारिक समीक्षक का व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है। उन्होंने अपनी कविता 'जूही की कली' की जो विस्तृत अर्थ-मीमांसा की वह हिंदी की व्यावहारिक समीक्षा का अप्रतिम उदहारण है। इस कविता की व्याख्या करते हुए उन्होंने हिंदी में पहली बार कविता के 'आवयविक सिद्धांत' (ऑर्गेनिक थियरी ऑफ पोएट्री) का निर्वचन किया। इसी प्रकार 'परिमल' की भूमिका में उन्होंने मुक्त छंद का जो गहन विवेचन प्रस्तुत किया वह हिंदी में एक नए छंद-शास्त्र की आधारशिला है। छंदों की मुक्ति की आवश्यकता हो उन्होंने स्वच्छन्दता के जीवन-मूल्य से

Scanned by CamScanner

जोड़ते हुए कहा : 'मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है।' गद्य को निराला 'जीवन संग्राम की भाषा' मानते थे। पर साहित्य की मुक्ति उन्हें उसकी कविता में ही दिखाई पड़ती थी। प्रसाद की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने काव्य-संबंधी समग्र चिंतन को सामान्य लोकानुभव से ऊपर उठाकर दार्शनिक धरातल प्रदान किया और काव्य का संबंध हृदय से आगे ले जाकर आत्मा से जोड़ा। प्रसाद जी भी शुक्ल जी की तरह ही रसवादी थे परंतु उन्होंने रस-चिंतन को साहित्यदर्पण की परंपरा से अलग कर अभिनवगुप्त की शैवाद्वैतवादी परंपरा से जोड़ा। इसके अलावा जहाँ भारतीय नाटकों में उन्होंने रस की आनंदवादी परंपरा को देखा-समझा वहाँ पश्चिम के महाकाव्यों में जीवन के प्रति त्रासदीय दृष्टिकोण को भी स्वीकार कर, इन दोनों के बीच दार्शनिक स्तर पर संतुलन स्थापित करने की कोशिश की। छायावाद की रहस्य-चेतना को स्पष्ट करने के क्रम में उन्होंने सम्पूर्ण हिंदी साहित्य में रहस्यवादी परंपरा की संक्षिप्त रूपरेखा भी प्रस्तुत की।

प्रसाद की आलोचना की तीन मुख्य उपलब्धियाँ थीं। एक तो उन्होंने छायावाद को विजातीयता के आक्षेप से मुक्त करते हुए निर्णायक रूप से उसकी भारतीयता की प्रतिष्ठा की। दूसरे, छायावाद को आचार्य शुक्ल ने जो काव्य-शैली मात्र माना था, उसका खंडन करके प्रसाद ने छायावाद के शैली-चमत्कार का संबंध अनुभूति चमत्कार से जोड़ा, और तीसरे छायावादी काव्य के सौंदर्य में निहित शिवत्व का दार्शनिक स्तर पर उद्घाटन किया। कुल मिलाकर वे छायावाद के सबसे समर्थ सिद्धांतशास्त्री थे।

महादेवी वर्मा ने जिस समय साहित्य में पदार्पण किया उस समय तक छायावाद प्रतिष्ठित हो चुका था। उन्होंने अपने काव्य-संग्रहों की भूमिकाओं और अन्य निबंधों में छायावाद संबंधी प्रश्नों को निश्चित परिभाषाएँ देने का प्रयत्न किया। आलोचना को उनकी दो मौलिक देनें स्वीकार की जाती हैं। लोक गीतों के आधार पर गीत-काव्य की विशेषताओं की व्याख्या और प्रगतिशील आंदोलन की रोशनी में छायावाद की सामाजिकता और यथार्थवादिता की व्याख्या। उन्होंने यह काम आलोचना के लिए उपयुक्त तर्क-विवेकसम्मत गद्य में नहीं, काव्योचित अलंकृत गद्य में किया। शुक्लोत्तर आलोचना में छायावादी कवियों का योगदान संक्षेप में इस प्रकार है :

1. इन कवियों ने प्राचीन शास्त्रवादी मूल्यों का विरोध किया और नए मूल्यों के प्रश्न पर आचार्य शुक्ल और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से टक्कर ली।

2. सुमित्रानंदन पंत के 'पल्लव' का प्रवेश आलोचना के प्रतिमानों का पहला घोषणा-पत्र माना जाता है। उन्हें विश्वास था कि नए ढंग की आलोचना की शुरुआत अंग्रेजी ढंग की आलोचना के प्रचार से ही हो सकती है और यह काम विश्वविद्यालयों में हो सकता है वयोवृद्ध आचार्यों के द्वारा नहीं।

3. इन कवियों ने चली आती परंपरागत आलोचना-पद्धति को कहीं चुनौती दी और कहीं उसकी पुनर्व्याख्या की। इन प्रतिमानों मे एक महत्वपूर्ण प्रश्न उस रसवाद का भी था जिसकी एक व्याख्या आचार्य शुक्ल पहले कर चुके थे।

4. परंपरागत प्रतिमानों से तो इन्होंने अपना मतभेद व्यक्त किया ही किंतु अनेक प्रश्नों पर इनमें आपसी मतभेद भी काफ़ी था। इनके बीच होने वाले विवादों ने हिंदी आलोचना को समृद्ध किया।

5. इन्होंने रीतिकालीन काव्य-रुचि से भिन्न एक नए सूक्ष्म शिल्प-बोध की आवश्यकता पर बल दिया।

6. इन कवियों ने छायावाद के लिए नए साहित्यशास्त्र के निर्माण का प्रयत्न किया। इस दृष्टि से पंत का काव्य-भाषा विश्लेषण और निराला के छंद संबंधी विचार महत्वपूर्ण हैं। महादेवी का गीत-विधा का विवेचन और निराला की अर्थ-मीमांसा भी इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है।

7. निराला ने हिंदी आलोचना में पहली बार कविता के आवयविक सिद्धांत (ऑर्गेनिक थियरी ऑफ पोयट्री) का निर्वचन किया और प्रसाद ने हिंदी आलोचना को दार्शनिक धरातल प्रदान किया।

8. ये कवि छायावाद के समर्थ सिद्धांतशास्त्री थे।

Scanned by CamScanner